SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चुरचू ब्लॉक में जनजातियों द्वारा कृषि कार्य एवं उसमें विकास की संभावनाएँ

बन्धन उराँव, शोधार्थी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
सरोज कुमार सिंह, (Ph.D.), स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

बन्धन उराँव, शोधार्थी, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
सरोज कुमार सिंह, (Ph.D.),
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/03/2022
Revised on : -----
Accepted on : 28/03/2022
Plagiarism : 02% on 21/03/2022

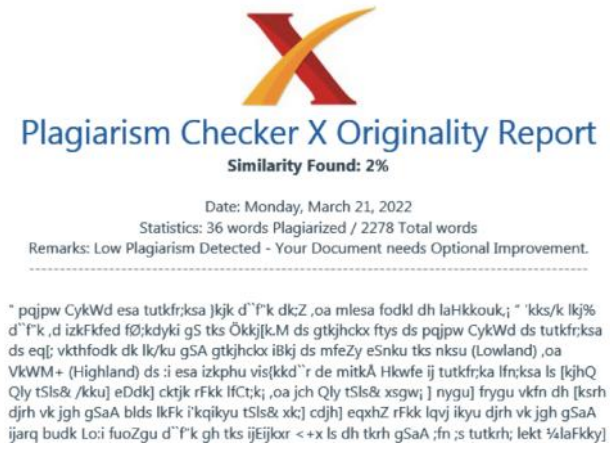
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, March 21, 2022
Statistics: 36 words Plagiarized / 2278 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

" pqjpw CykWd esa tutkfr;ksa]kjk d``f"k dk;Z ,oa mlesa fodkl dh laHkkouk;¡ " 'kks/k lkj% d``f"k ,d izkFkfed fØ;kdyki gS tks Ökkj[k.M ds gtkjhckx ftys ds pqjpw CykWd ds tutkfr;ksa ds eq[; vkthfodk dk lk/ku gSA gtkjhckx iBkj ds mfeZy eSnku tks nksu (Lowland) ,oa VkWM+ (Highland) ds :i esa izkphu vis{kkd``r de mitkÂ Hkwfe ij tutkfr;ka lfn;ksa ls [kjhQ Qly tSls& /kku] eDdk] cktjk rFkk lfCt;k; ,oa jch Qly tSls& xsgw; ] nygu] frygu vkfn dh [ksrh djrh vk jgh gSaA blds lkFk i'kqikyu tSls& xk;] cdjh] eqxhZ rFkk lqvj ikyu djrh vk jgh gSaA ijarq budk Lo:i fuoZgu d``f"k gh tks ijEijkxr <+x ls dh tkrh gSaA ;fn ;s tutkrh; lekt ¼laFkky]

शोध सार

कृषि एक प्राथमिक क्रियाकलाप है जो झारखण्ड के हजारीबाग जिले के चुरचू ब्लॉक के जनजातियों के मुख्य आजीविका का साधन है। हजारीबाग पठार के उर्मिल मैदान जो दोन (Lowland) एवं टॉड़ (Highland) के रूप में प्राचीन अपेक्षाकृत कम उपजाऊ भूमि पर जनजातियां सदियों से खरीफ फसल जैसे– धान, मक्का, बाजरा तथा सब्जियाँ एवं रबी फसल जैसेः गेहूँ, दलहन, तिलहन आदि की खेती करती आ रही हैं। इसके साथ पशुपालन जैसेः गाय, बकरी, मुर्गी तथा सुअर पालन करती आ रही हैं, परंतु इनका स्वरूप निर्वहन कृषि ही है जो कि परम्परागत ढ़ग से की जाती हैं। यदि ये जनजातीय समाज (संथाल, मुण्डा, उराँव, बेदिया, बिरहोर) आधुनिक तकनीक, सिंचाई तथा सरकारी योजनाओं को अपनाती है तो, कृषि निर्वहन से गहन निर्वहन या मिश्रित तथा व्यावसायिक कृषि में बदल सकता है। इससे इन्हें आर्थिक लाभ से जीवन में खुशहाली आ सकती है।

मुख्य शब्द

कृषि, पठारी भूमि, अर्थोपार्जन, पशुपालन, पलायन, टॉड़–दोन.

परिचय

भूमि का उपयोग कर विभिन्न मौसमी समयों में विभिन्न फसलों के उत्पादन करने की क्रिया और प्रक्रिया को कृषि कहते हैं। कृषि अर्थव्यवस्था की वह शाखा है जिसमें वनस्पति रोपण और पशुपालन का कार्य होता है। कृषि एक प्राथमिक क्रियाकलाप है जिसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधन पशुधनों एवं मानव संसाधनों के उपयोग द्वारा मानवीय आवश्यकता की पूर्ति करना है।

चुरचू ब्लॉक की कृषि यहाँ की भौगौलिक परिस्थितियों द्वारा प्रभावित एवं नियंत्रित होती हैं। यहाँ प्राकृतिक

सुविधाएँ एवं समस्याएँ भी है। यहाँ की जनजातियों (मुण्डा, उराँव, बेदिया एवं संथाल) द्वारा प्रारंभिक जीवन का निर्वहन कृषि से किया जाता हैं। यहाँ की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी एवं उपोष्ण हैं। यहाँ की भूमि पठारी होने के कारण उबड़–खाबड़ है। यहाँ आग्नेय, रूपांतरित एवं स्तरित तीनों प्रकार कें चट्टानें उपस्थित होने के कारण विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती है। यहाँ अपेक्षाकृत कम उपजाऊ भूमि के बावजूद भूमि में कृषि विकास की कई संभावनाएँ है। कहा भी जाता है कि ''जहाँ जितना अभाव होता है, वहाँ उतना ही ज्यादा विकास कि संभावनाएँ बनती है।''

चुरचू ब्लॉक के अर्न्तगत जनजातिय समुदाय द्वारा, विभिन्न प्रकार के लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, हस्तकरघा उद्योग को अपनाते हुए पशुपालन, मुर्गीपालन, लाह/लाख पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा जंगलों से फूल–फल तथा जंगली जड़ी–बूटी को औषधि के रूप में बनाकर बाजारों में बेचकर, थोड़ा बहुत अर्थ की प्राप्ति हो जाती है। साथ ही अपने खेतों में विभिन्न प्रकार के फसलों का उत्पादन करते हैं, जैसे– रबी फसल, खरीफ फसल, जायद फसल, साग–सब्जियाँ उगाकर अपने उपयोग में जाते हैं, तथा जो बचता है उसे बाजार में बेच देते हैं जिससे वह अपना जीवन–बसर करते हैं। बचे हुए धन (मुनाफा) से वस्त्र, आभूषण, परिवहन के साधन खरीदते हैं, साथ ही अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिला सकते हैं जिससे उनका शैक्षिक स्तर, बौद्धिक स्तर का विकास हो सके और वे अपने जीवन स्तर को सुधार सकता है, परिवार चला सकता है और निरंतर आगे की ओर आर्थिक, शैक्षिक, बौद्धिक रूप से बढ़ने में सक्षम हो सकता है।

अध्ययन क्षेत्र

चुरचू ब्लॉक झारखण्ड राज्य के उत्तरी छोटा नागपुर प्रमंडल मुख्यालय, हजारीबाग पठार के दक्षिण–पूर्वी भाग में 23°47′56'' से 23°56′52'' उत्तरी अक्षांश तथा 85°23′48'' से 85°36′21'' पूर्वी देषांतर के मध्य 201.46 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है।

चुरचू ब्लॉक हजारीबाग जिले के 5 प्रखंड (1) टाटीझरिया (2) दारू (3) हजारीबाग सदर (4) बड़कागाँव (5) डाड़ी प्रखंड, रामगढ़ जिले के एक प्रखंड माण्डू एवं बोकारो जिले के एक प्रखंड गोमिया से घिरा है। यहाँ की भूमि पठारी, भ्रंश कगार तथा कगारपदीय है, जहाँ चट्टानें ग्रेनाइट, नीस एवं अवसादी है। यहाँ कई प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती है। लाल, काली, दोमट एवं जलोढ़, जो कम उत्पादकता वाली होती है। यहाँ की कृषि मानसून पर आश्रित है, जिसके कारण सिंचाई की अति आवश्यकता होती है। यहाँ कृषि भूमि दो भागों में दोन एवं टॉड़ में बटी हुई है। दोन में धान प्रमुख फसल है, जबकि टॉड़ में साग–सब्जी, दलहन एवं तिलहन इत्यादि उगाई जाती है।

यहाँ कृषि श्रमिक 30.53 प्रतिशत, कृषि कार्य में 32.72 प्रतिशत, घरेलू उद्योग में 2.75 प्रतिशत एवं अन्य कामगार 34 प्रतिशत कार्यरत है। किन्तु वर्ष के अधिकांश समय इन्हें काम नहीं मिलता, जिसके कारण यहाँ की अधिकांश जनजातियाँ आजीविका हेतु पलायन करती है या पशुचारण, मजदूरी, शिकारी, मछली पकड़ना एवं जंगलों से कंद–मूल, फूल–फल, शाल–पत्ता, केन्दु पत्ता, दतुवन, औषधीय पौधे, जड़ी–बूटी, छाल इत्यादि इकट्ठा करते हैं तथा घुम–घुमकर बेचते हैं तथा अर्थोपार्जन का कार्य करते है, ताकि परिवार का भरण–पोषण हो सके। साथ ही उनका अर्थतंत्र लघु उद्योग, कुटिर उद्योग, हस्तकरघा उद्योग तथा अन्य छोटे–छोटे उद्योगों पर आश्रित हैं।

झारखंड का मानचित्र

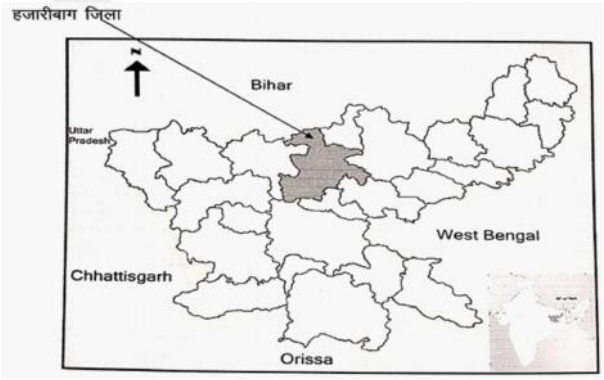

(स्त्रोतः JhanrkhandHazaribag.pn....commons.wikipedia.org)

हजारीबाग का मानचित्र

(स्त्रोतः GIS 01 Jharkhand.gov.in)

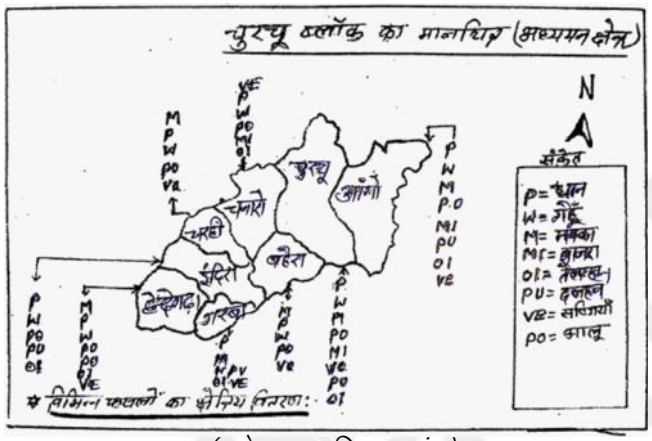

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

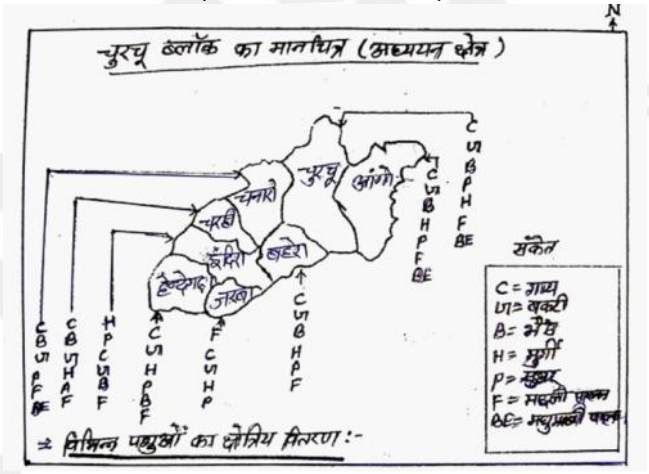

(स्त्रोतः Toposheet no F45B5)

चुरचू ब्लॉक के आठो पंचायत में विभिन्न फसलों एवं दलहन, तिलहन के उत्पादन को देखा जाय तो तुलनात्मक रूप से पठारी व जंगली एवं कोयला वाले क्षेत्रों के भूमि में धान, दलहन एवं तिलहन का उत्पादन अपेक्षाकृत कम हुआ है, जिसका प्रमुख कारण सिंचाई का अभाव एवं उपयुक्त खाद, बीज, आधुनिक कृषि पद्धति का न होना साथ ही विभिन्न स्तर के सरकारी योजनाओं का धरातल पर न उतारा जाना है। ठीक उसी प्रकार विभिन्न ग्रामीण पशुओं का क्षेत्रीय वितरण भी एक समान नहीं है, क्योंकि निचली एवं समतल भू–भाग वाले क्षेत्रों/गाँवों में भैंस, गाय, बकरी, सुअर तथा मछली पालन किया जाता है, किन्तु पठारी एवं जंगली क्षेत्रों में सुअर, मधुमक्खी, लाह/लाख इत्यादि का पालन किया

जाता है। साथ ही थोड़ी बहुत संख्या में सभी जगहों पर पशुपालन किया जाता है।

देश में कृषि से राष्ट्रीय आय (2018–2019) मे 130.11 लाख करोड़ रूपयें (2018–2019) में जीडीपी दर 7. 2 प्रतिशत (वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत), मत्स्य (34 प्रतिशत) उत्पादन, (2018–2019) में फसलों का उत्पादन 141.59 मिलियन टन, सकल घरेलू उत्पादन 188.41 लाख करोड़ रूपये थे, जो झारखण्ड एवं हजारीबाग जिलों मे राष्ट्रीय कृषि आय की तुलना में काफी कम हुआ है।

चुरचू ब्लॉक अन्तर्गत विभिन्न पंचायतों में धान, दलहन, तिलहन उत्पादन एव पशुपालन और सब्जी उत्पादन (मुख्य तथा गौण उत्पादन)

क्रम संख्या	गाँव/पंचायत	धान उत्पादन	तिलहन उत्पादन	दलहन उत्पादन	पशुपालन	सब्जी उत्पादन
1	आंगो	गौण	गौण	गौण	मुख्य	मुख्य
2	चुरचू	गौण	गौण	गौण	मुख्य	मुख्य
3	चनारो	गौण	मुख्य	मुख्य	मुख्य	गौण
4	चरही	मुख्य	मुख्य	मुख्य	मुख्य	गौण
5	बहेरा	गौण	गौण	गौण	गौण	गौण
6	इंदिरा	मुख्य	गौण	गौण	मुख्य	मुख्य
7	जरबा	मुख्य	मुख्य	मुख्य	गौण	मुख्य
8	हेन्देगढ़ा	मुख्य	मुख्य	मुख्य	मुख्य	मुख्य

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त पंचायतों में धान उत्पादन, दलहन, तिलहन, सब्जी उत्पादन एवं पशुपालन में तुलनात्मक दृष्टि से कहीं ज्यादा तो कहीं कम उत्पादन होता है। पशुपालन में भी मैदानी क्षेत्रों में कुछ अधिक एवं पठारी क्षेत्रों में तुलनात्मक दृष्टि से कुछ कम पाई जाती है।

उद्देश्य

1) चुरचू ब्लॉक अर्न्तगत जनजातियों द्वारा कृषि कार्य एवं आर्थिक विकास की वर्तमान संभावनाओं का पता लगाना।
2) जनजातियों द्वारा कृषि कार्य एवं नये याजनाओं, लाभों और संभावनाओं का पता लगाना।

शोध विधि एवं आँकड़ों का स्रोत

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए संबधित ब्लॉक का प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का सहारा लिया गया है। प्रखंड कार्यालय से, वेबसाइट के माध्यम से, जनजातियों द्वारा कार्य संबधी आँकड़ों कों एकत्रित किया। शोध विधि के रूप में निरीक्षण एवं पूछताछ के आधार पर एवं विश्लेष्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

शोध लब्धि/प्राप्ति

चुरचू ब्लॉक अर्न्तगत जनजातियों द्वारा कृषि कार्य करने में जलवायु, मौसम, मिट्टी, भौगौलिक परिस्थितियाँ, क्षेत्रिय भिन्नताएँ (पठार, जंगल, उबड़–खाबड़ भूमि) होने के बावजूद उर्मिल मैदान पर धान, दलहन, तिलहन, सब्जियों का उत्पादन, पशुपालन, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन, लाह/लाख, मधुमक्खी पालन के साथ–साथ लघु एवं कुटीर उद्योग, हस्तकरघा उद्योग, जंगली फूल–फल, जड़ी–बुटी को औषधि के रूप में इकट्ठा करना, राणु (दवाई) का निर्माण करना तथा पेय पदार्थ हड़िया बनाकर बेचना एवं अर्थोपार्जन करना है। साथ ही विभिन्न सरकारी योजनाओं गैर–सरकारी योजनाओं (एनजीओ) सरकारी वित्तीय सहायता लेकर आधुनिक कृषि यंत्र, कीटनाशक दवा, जैविक खाद, उत्तम बीज एवं सिंचाई का प्रबंध कर कृषि उत्पादन में वृद्वि की जा सकती तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की जा सकती है।

चुरचू ब्लॉक अर्न्तगत हेन्देगढ़ा एवं बहेरा पंचायत में धान, दलहन, तिलहन, सब्जी का प्रति हेक्टयर उत्पादन एवं प्रति पंचायत दूध का उत्पादन वार्षिक (लीटर में)

क्रम संख्या	पंचायत का नाम	धान उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	दलहन उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	तिलहन उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	सब्जी उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	दूध उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)
1.	हेन्देगढ़ा	495 क्विंटल	45 कि0ग्रा0	50 कि0ग्रा0	124 कि0ग्रा0	3600ली0
2.	बहेरा	494 क्विंटल	25 कि0ग्रा0	30 कि0ग्रा0	115 कि0ग्रा0	7200 ली0

(स्रोतः प्राथमिक समंक)

झारखण्ड, ब्लॉक का रबी, खीरफ, जायद तथा दूध उत्पादन प्रति हेक्टयर (2012–2013) (Old Data)

नाम	धान उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	दलहन उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	तिलहन उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	सब्जी उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)	दूध उत्पादन (प्रति हेक्टेयर)
झारखण्ड	2023कि0ग्रा0	8166कि0ग्रा0	3483 कि0ग्रा0	107.03 कि0ग्रा0	173.33 मिलियन टन

(स्रोतः द्वितीयक समंक)

दलहन, तिलहन, सब्जी उत्पादन एवं दूध उत्पादन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पता चलता है कि हेन्देगढ़ा पंचायत एवं बहेरा पंचायत में धान का उत्पादन लगभग समान है, किंतु राष्ट्रीय आय से तुलनात्मक अध्ययन करने पर पता चलता है कि धान उत्पादन, दलहन, तिलहन, सब्जी उत्पादन एवं दूध उत्पादन के मामले में काफी पिछड़ा हुआ है। अतः यहाँ उत्पादन की काफी संभावनाएँ बनती है। इसके लिए सिंचाई का साधनों का व्यवस्था करना, उत्तम खाद, बीज, कीटनाषक दवा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विधि से कृषि कर रबी, खरीफ, जायद फसलों के उत्पादन में वृद्धि किया जा सकता है। साथ ही दूध उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए उत्तम नस्ल के गायों को पाला जा सकता है तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर सुखी जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

चुरचू ब्लॉक में जलवायु एवं ऋतुओं के अनुसार फसलों का उत्पादन किया जाता हैः

क्रम संख्या	ऋतु	कब से कब तक	उत्पादित फसलें
1.	(ग्रीष्म) गरमा/जायद	मार्च से मध्य जून	धान, मकई, करेला, तरबुजा, खरबुजा, कोहड़ा, ककड़ी, सब्जी।
2.	(वर्षा) खरीफ	मध्य जून से अक्टूबर	धान, मकई, ज्वार, बाजरा, दलहन, तिलहन, सब्जी, खरीफ फसल।
3.	(शरद) रबी	नवम्बर से फरवरी	गेहूँ, जौ, आलू, सब्जी, दलहन, तिलहन तथा अन्य फसलें ।

(स्रोतः द्वितीयक समंक)

विवेचना

चुरचू ब्लॉक अर्न्तगत जनजातियों द्वारा कृषि कार्य एवं उसमें विकास की संभावनाएँ का विस्तारपूर्वक अध्ययन करने पर चलता है कि, पूरे चुरचू प्रखण्ड में भौगोलिक असमानता, जलवायु विभिन्नता एवं मृदा की भिन्नता तथा फसल भिन्नता के बावजूद जीविकोपार्जन तथा जीवन स्तर को उपर उठाने हेतु कृषि कार्य के साथ–साथ कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, लघु उद्योग एवं अन्य छोटे उद्योगों सरकारी, गैर–सरकारी योजनाओं, एनजीओ तथा विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा सहयोग कर प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर जीवन स्तर को उठाया जा सकता है। यदि सरकार ग्रामीण एवं जनजातिय कृषकों, श्रमिकों को उनके द्वारा उत्पादित फसलों एवं अन्य उद्योगों द्वारा उत्पादित/निर्मित वस्तुओं का सही समय पर सही दाम मिलने से उनका श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा तथा कृषकों का मौसमी पलायन काफी हद तक रूक सकता है।

इन्हें पलायन से रोकने तथा रोजगार उपलब्ध कराने एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हेतु सरकार की कृषि संबंधी योजनाएँ निम्नलिखित हैः

1) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना।
2) कृषि के विस्तारीकरण हेतु वनपट्टा का लाभ देना।
3) भूमि का समतलीकरण करना, खाद, बीज, मशीनीकरण, कीटनाशक दवाइयाँ प्रदान करना।
4) मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (मिट्टी की गुणवत्ता का अध्ययन करके एक अच्छी फसल प्राप्त करना)।
5) खाद्य प्रसंस्करण की सुविधा एवं बाजार की व्यवस्था करना।
6) निवेश की सुविधा प्रदान करना।
7) जैविक खाद, जैविक दवा, आधुनिकीकरण, कृषि यंत्र एवं उत्तम बीज का प्रयोग करना ।
8) मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजनाः
   - ➢ किसानों को आर्थिक सशक्तिकरण एवं उन्हें ऋण के कुचक्र से मुक्ति दिलाने हेतु राशि सीधे किसानों कें खाते में।
   - ➢ 1 एकड़ या इससे कम कृषि भूमि वाले किसानों कों 5000/– प्रतिवर्ष दिया जाता है।
   - ➢ 5 एकड़ या इससे अधिक कृषि भूमि वाले किसानों कों 25000/– प्रतिवर्ष दिया जाता है।
9) प्रधानमंत्री किसान निधि सम्मान योजना के तहत 6000/– प्रतिवर्ष दिया जाता है।
10) झारखण्ड शहीद ग्राम विकास योजना।
11) किसानों को स्मार्ट फोन खरीदने के लिए 2000/– (नई तकनीकी का ज्ञान, मौसम का पूर्वानुमान, प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए) दिया जाता है।
12) जनजातिय कृषि अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् तथा कृषि वानिकी प्रणाली।
13) अन्य लाभकारी योजनाएँ लागू करना।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषणों से ज्ञात होता है कि चुरचू ब्लॉक में जनजातियों द्वारा कृषि कार्य एवं उसमें विकास की संभावनाएँ काफी है, क्योंकि ''जहाँ जितना ही अधिक अभाव होता है वहाँ उतना ही ज्यादा विकास की संभावनाएँ बनती है।'' इसके लिए केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा जिला प्रशासन, प्रमंडल एवं प्रखंड के प्रशासक की इच्छा शक्ति का होना अति आवश्यक है जिससे सरकारी, गैर–सरकारी, स्वयंसेवी संस्थाएँ, निजी संस्थाओं द्वारा विभिन्न कृषि संरक्षण एवं संवर्धन कर, कुटीर उद्योग, हस्तकरघा उद्योग , फसल बीमा योजना, पशुपालन, सिंचाई, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, लाह/लाख पालन तथा अन्य योजनाओं को शामिल कर आर्थिक रूप से जनजातिय कृषक समुदाय को समृद्ध बनाया जा सकता है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कृषि विकास की निम्न संभावनाएँ भी मौजूद हैः

1) सिंचाई की व्यवस्था (नदी को बाँधकर चेकडैम, तालाब, कुआँ की व्यवस्था कर)।
2) प्रशिक्षण लेकर (समूह में दूसरे देशों का भ्रमण कर कृषि संबधी प्रशिक्षण लेकर)। 2018 में सरकार ने इजराइल देश कृषकों को प्रशिक्षण हेतु भेजी थी।
3) आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकी को अपनाकर।
4) आधुनिक एवं नये कृषि यंत्रों, उत्तम बीज, जैविक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कर उत्पादन में वृद्धि करना।
5) काजू की कृषि (पहाड़ी क्षेत्रों में की जा सकती है)।
6) लाह/लाख एवं मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन, पशुपालन करना।
7) धान, दलहन, तिलहन, सब्जी, दूध उत्पादन की मात्रा बढ़ाकर।
8) फसल बीमाएँ, किसान क्रेडिट कार्ड, मृदा स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध करा कर।
9) निवेश की संभावनाओं को बढ़ाकर एवं बाजार की व्यवस्था कर।
10) खाद्य प्रसंस्करण की व्यवस्था कर तथा फसल का उचित मूल्य निर्धारण कर।

इस प्रकार से देखा जाए तो कृषि विकास की अनेक संभावनाएँ देखने को मिलती है। यहाँ की मुख्य फसलें धान है तत्पश्चात मकई, मडुवा/रागी, गोंदली, गोड़ा धान, करहैनी धान, ज्वार, बाजरा, सकरकंद, आलू, साग–सब्जी, दलहन, तिलहन एवं अन्य कृषि फसलें है, जिन्हें संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, नीरज (2009): गया जिले में कृषि का विकास एवं संभावनाएँ, *Geographical Perspective*, Vol. 10, pp 90-94.
2. ज्योति, दिव्या (2017): बिहार में कृषि का स्वरूप, *Geographical Perspective*, Vol.18, pp 140-148.
3. तिवारी, राम कुमार (2016): *झारखण्ड का भूगोल,* नई दिल्ली, राजेश पब्लिकेशन।
4. प्रसाद, लगन राम (2017): आधुनिक कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था की नई उम्मीद, *Geographical Perspective*, Vol.18, pp 114-120.
5. वर्मा, उमेश कुमार (2009): *झारखण्ड का जनजातीय समाज,* सुबोध ग्रंथमाला, पुस्तक पथ राँची।
6. सिंह, सरोज कुमार (2015): *झारखण्ड प्रदेश की भौगोलिक व्याख्या,* राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. हलधर, शौमिक (2015): लेवल ऑफ वेलबीइंग ऑफ ट्राइबल पोपुलेषन ऑफ चुरचू ब्लॉक, हजारीबाग, झारखण्ड, *IOSR Journal of Humanities and social Science*, Vol.20,issue-12,Ser-2(Dec-2015) pp 28-35.
8. हुसैन, माजिद (2008): *भौतिक भूगोल,* रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. बेवसाइट (कृषि से संबंधित), कृषि सेवा, किसान सेवा, कृषि और सहकारिता मंत्रालय।
10. www.business-standard.com

****